पंजीयन प्रपत्र / **Registration Form**

'मध्यकालीन हिन्दी कविता का अन्य ललित कलाओं से अन्तःसम्बन्ध'

अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी

06, 07 एवं 08 मार्च 2019

नाम / **Name** .....

पदमान / **Designation** .....

विश्वविद्यालय / **University**.....

महाविद्यालय / **College**.....

देश / **Country**..... राज्य / **State** .....

पत्राचार का पूरा पता / **Postal address**.....

दूरभाष / **Telephone no.**/ कार्यालय / **Office**.....निवास / **Residence**.

.....

मोबाईल नं. / **Mobile no.** .....ई–मेल / **E.mail** .....

शोधपत्र का शीर्षक / **Title of Research paper**.....

आगमन तिथि / **Date of Arrival**.....प्रस्थान तिथि / **Date of Departure** ----------

हस्ताक्षर / **Signature**

टीप / **Note : Photocopy is accepted**

संरक्षक
प्रो. (डॉ.) माण्डवी सिंह
कुलपति
इंदिरा कला संगीत, विश्वविद्यालय,
खैरागढ़, छत्तीसगढ़ (भारत)

मार्गदर्शक
प्रो. आई.डी. तिवारी
अधिष्ठाता, कला संकाय

संयोजक
प्रो. मृदुला शुक्ल
विभागाध्यक्ष, हिन्दी

सह–संयोजक
प्रो. राजन यादव, हिन्दी विभाग
डॉ. देवमाईत मिंज, सहायक प्राध्यापिका, हिन्दी

विशेष सहयोग
श्री पी.एस. ध्रुव, कुलसचिव
प्रो. काशीनाथ तिवारी, विभागाध्यक्ष, आजीवन शिक्षा
श्री विजय सिंह, सहायक कुलसचिव

सदस्य आयोजन समिति
श्रीमती मेधाविनी तुरे, कु. अनीता पटेल
श्रीमती स्मृति कन्नौजे, श्रीमती ममता दुबे
उमेन्द्र कुमार चंदेल, टिकेश्वर प्रसाद जंघेल
आशाराम साहू, हर्षकुमार वर्मा,
खुशबू बावनकर

सम्पर्क
प्रो. मृदुला शुक्ल : मो. नं. 9425655312
प्रो. राजन यादव : मो. नं. 9977567123
डॉ. देवमाईत मिंज : मो. नं. 9406276485

E-mail : hindidp2018@gmail.com
Website : WWW.iksv.ac.in

इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (छ.ग.)
(नैक द्वारा ए, ग्रेड प्रत्यायित)

अन्तराष्ट्रीय संगोष्ठी

'मध्यकालीन हिन्दी कविता का अन्य ललित कलाओं से अन्तःसम्बन्ध'
दिनांक 06, 07 एवं 08 मार्च 2019

आयोजक
हिन्दी विभाग (कला संकाय)
इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़,
राजनाँदगाँव, छत्तीसगढ़ (भारत)–491881

प्रायोजक
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नयी दिल्ली (भारत)

मान्यवर,

इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ का हिंदी विभाग त्रि–दिवसीय अंतरराष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन करने जा रहा है। संगोष्ठी का विषय है– 'मध्यकालीन हिन्दी कविता का अन्य ललित कलाओं से अन्तःसम्बन्ध'।

इस शोध संगोष्ठी में आप सादर आमंत्रित हैं। आपकी सहभागिता से संगोष्ठी में मध्यकालीन हिन्दी कविता के कुछ और स्वर्णिम पृष्ठ कुछ अधिक प्रामाणिकता के साथ खुलेंगे, ऐसी अपेक्षा है।

विषय का औचित्य :

हिन्दी की मध्यकालीन कविता भाव, विचार, प्रयोजन और कला के स्तर पर भारतीय ही नहीं, वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अपना अलग स्थान रखती है। पूर्वमध्यकाल अर्थात भक्तिकाल के कबीर, जायसी, सूर, तुलसी और मीरा के पद भारत ही नही, फिजी सूरीनाम, मॉरिशस, नेपाल आदि में आज भी अत्यन्त लोकप्रिय हैं। तुलसी के रामचरितमानस की चौपाइयाँ और कबीर के दोहे जीवन को चेतना देने वाले मंत्रों की तरह आज भी व्यवहृत होते हैं। उत्तरमध्यकाल अर्थात रीतिकाल के केशव, देव, मतिराम, बिहारी, घनानन्द की कविता सौन्दर्य, प्रेम और नायिका भेद के लिए आज भी प्रतिमान बनी हुई है। विशेष बात यह है कि इसमें काव्यकला के साथ जो संगीत, चित्रकला, नाट्यकला आदि अन्य ललित कलाओं का मणिकांचन संयोग हुआ है, उसने इसकी प्रभावक्षमता को द्विगुणित कर दिया है। इसी कारण आज से 400–500 वर्ष पुराना यह काव्य आज भी अपना अस्तित्त्व बनाये हुए है। साहित्य एवं प्रदर्शनकारी कलाएँ दोनों क्षेत्रों में उसकी चर्चा भी होती है, उपयोग भी हो रहा है। वह प्राचीन होकर भी प्रासंगिक बना हुआ है।

आज न केवल हमारे देश वरन् संसार भर में अशान्ति, अराजकता, हिंसा का बोलबाला है। जीवन में दिनोंदिन बढ़ती स्वार्थपरकता, आत्मकेंद्रितता तथा सुविधाभोगिता के कारण मनुष्यों के मन में शान्ति नहीं है। वे भीड़ में भी अकेले होते जा रहे हैं। उनके जीवन का रस सूखता जा रहा है। ऐसे समय में हिन्दी की मध्यकालीन कविता के अन्तःसम्बन्धीय कलेवर पर चर्चा न केवल कला की रससिक्तता की ओर ध्यानाकर्षण करेगी, वरन् सामंजस्य और सामूहिकता की सोदाहरण सार्थकता भी प्रमाणित करेगी। हमारे विश्वविद्यालय की ललित कलात्मक प्रकृति के परिप्रेक्ष्य में तो यह चर्चा और भी प्रासंगिक है, क्योंकि इस अन्तःसम्बन्ध को और उसके गुणात्मक प्रभाव को हम प्रायोगिक रूप में भी देख पायेंगे। इस विषय पर चर्चा न केवल मध्यकालीन कलाओं के अन्तःसम्बन्धीय आयामों को खोलेगी, वरन् विद्यार्थियों, शोधार्थियों की ललित कलागत एवं शोधगत समझ को और स्पष्ट एवं सशक्त बनायेगी।

चर्चा हेतु बिन्दु :–

(1) मध्यकालीन हिन्दी कविता की पृष्ठभूमि
(2) मध्यकालीन, पूर्वमध्यकालीन (भक्तिकालीन) तथा उत्तर मध्यकालीन (रीतिकालीन) हिन्दी कविता का स्वरूपगत वैशिष्ट्य
(3) ज्ञानमार्गी (संत) कवियों के काव्य का संगीत से अन्तःसम्बन्ध / चित्रकला से अन्तःसम्बन्ध / नाट्यकला से अन्तःसम्बन्ध
(4) प्रेममार्गी (सूफी) कवियों के काव्य का संगीत से अन्तःसम्बन्ध / चित्रकला से अन्तःसम्बन्ध / नाट्यकला से अन्तःसम्बन्ध
(5) कृष्णभक्ति काव्य का संगीत से अन्तःसम्बन्ध / चित्रकला से अन्तःसम्बन्ध / नाट्यकला से अन्तःसम्बन्ध
(6) रामभक्तिकाव्य का संगीत से अन्तःसम्बन्ध / चित्रकला से अन्तःसम्बन्ध / नाट्यकला से अन्तःसम्बन्ध
(7) रीतिबद्ध कवियों के काव्य का संगीत से अन्तःसम्बन्ध / चित्रकला से अन्तःसम्बन्ध / नाट्यकला से अन्तःसम्बन्ध
(8) रीतिसिद्ध कवियों के काव्य का संगीत से अन्तःसम्बन्ध / चित्रकला से अन्तःसम्बन्ध / नाट्यकला से अन्तःसम्बन्ध
(9) रीतिमुक्त कवियों के काव्य का संगीत से अन्तःसम्बन्ध / चित्रकला से अन्तःसम्बन्ध / नाट्यकला से अन्तःसम्बन्ध
(10) अष्टछाप के कवियों का काव्य और संगीत
(11) मध्यकालीन कवियों में से किसी एक कवि के काव्य में संगीत / चित्रकला / नाट्यकला को लेकर भी आलेखन सम्भावित है।
(12) मध्यकालीन हिन्दी कविता में अन्य ललित कलागत अन्तःसम्बन्धःप्रभाव और प्रदेय

शोध पत्र एवं सारांश–

कृपया विषय से सम्बद्ध किसी भी पहलू पर अपना शोध पत्र एवं सारांश दिनांक 31.01.2019 तक (सॉफ्ट एवं हार्ड दोनों कापी में) प्रेषित करने का कष्ट करें।

साथ ही hindidp2018@gmail.com पर मेल करें।

फॉट : हिंदी – कृतिदेव 16, साईज 16

शोधपत्र अधिकतम 3000 शब्दों तथा सारांश 300 शब्दों तक सीमित होना चाहिए। शोधार्थियों को अपनी संस्था का प्रमाणपत्र प्रस्तुत करना अनिवार्य है। इस अवसर पर पुस्तक प्रकशन की भी योजना है। पुस्तक में प्रकाशनार्थ उन्हीं शोध पत्रों पर चयन समिति विचार करेगी, जिन्हें उपयुक्त पायेगी।

पंजीयन :

संगोष्ठी में प्रतिभागिता हेतु निर्धारित अंतिम तिथि तक पंजीयन प्रपत्र ऑनलाइन भरकर प्रस्तुत करना होगा। पंजीयन शुल्क देय नहीं है, किन्तु प्रपत्र भरकर जमा करना आवश्यक है, ताकि प्रतिभागिता सुनिश्चित की जा सके।

स्थानीय व्यवस्था :

प्रतिभागियों के दोपहर के भोजन की व्यवस्था आयोजक संस्था द्वारा की जाएगी।

टीप : प्रतिभागी अपनी आवास व्यवस्था तथा रात्रिकालीन भोजन की व्यवस्था स्वयं करें तथा मार्गव्यय अपनी संस्था से प्राप्त करने का कष्ट करें। आयोजक संस्था इनके लिए उत्तरदायी नहीं होगी।

आवास व्यवस्था हेतु प्रतिभागी खैरागढ़ के निम्नलिखित होटलों से सम्पर्क कर सकते हैं–

1– राम–जानकी होटल : दूरभाष क्र. 07820–234411
मो. नं. 9425563211

2– ए. आर. लॉज : मो. नं. 8085556109

3– आदित्य लॉज : मो. नं. 9691692010

विश्वविद्यालय और हिंदी विभाग :

वर्ष 1956 में स्थापित इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़ राज्य के खैरागढ़ नगर में स्थित है। यह एक अनूठा विश्वविद्यालय है, जहाँ पर संगीत, नृत्य, ललित कला एवं रंगमंच के क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्रदान की जाती है। तत्कालीन खैरागढ़ रियासत के राजा वीरेन्द्र बहादुर सिंह जी एवं उनकी पत्नी रानी पद्मावती देवी ने अपनी बेटी राजकुमारी इन्दिरा को श्रद्धांजलि प्रदान करते हुए संगीत एवं ललित कला के इस विश्वविद्यालय की स्थापना के लिये अपना पैत्रक महल दान में दिया था। उनके द्वारा दान में दिये गये महल में, जो कि एकीकृत स्थापत्य शैली का सबसे अच्छा उदाहरण है, विश्वविद्यालय की कक्षाएँ आज भी संचालित हो रही हैं। इस विश्वविद्यालय का उद्घाटन 14 अक्टूबर, 1956 को प्रियदर्शिनी श्रीमती इन्दिरा गाँधी द्वारा किया गया था। इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय एशिया का पहला ऐसा विश्वविद्यालय है, जो संगीत, नृत्य, चित्रकला, मूर्तिकला एवं रंगमंच आदि के लिये समर्पित है। यह संस्था वैश्वीकरण के इस दौर में सक्रिय रूप से संगीत एवं ललित कला के क्षेत्र में कलात्मक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु प्रतिबद्ध है।

खैरागढ़ भारत के मध्य भाग में स्थित छत्तीसगढ़ राज्य के राजनाँदगाँव जिले में स्थित है। यह शहरी क्षेत्रों के कोलाहल से दूर, समृद्ध ग्रामीण एवं आदिवासी क्षेत्र के मध्य कला–भावना के प्रसार के लिये आदर्श स्थान पर स्थित है। खैरागढ़ अपने ऐतिहासिक वास्तुशिल्प एवं समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिये भी प्रसिद्ध है। खैरागढ़ से निकटतम रेल्वे स्टेशन राजनाँदगाँव, डोंगरगढ़ एवं दुर्ग क्रमशः 40, 42 एवं 55 कि.मी. दूर हैं। नई दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता एवं चेन्नई के लिये सीधी गाडियाँ (नागपुर के माध्यम से) हावड़ा–मुम्बई के मुख्य रेल्वे मार्ग पर स्थित उपर्युक्त तीनों रेल्वे स्टेशनों से उपलब्ध हैं। खैरागढ़ से निकटतम हवाई अड्डों में स्वामी विवेकानंद हवाई अड्डा, रायपुर और डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डा, नागपुर क्रमशः 122 एवं 255 कि.मी. की दूरी पर हैं। जिला मुख्यालय राजनाँदगाँव से खैरागढ़ की दूरी 40 कि.मी. है।